National Journal of Multidisciplinary Research and Development
ISSN: 2455-9040; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 08-09-2019; Accepted: 10-10-2019
www.nationaljournals.com
Volume 4; Issue 6; November 2019; Page No. 21-23

सामाजिक अंकेक्षणः एक अवलोकन

सरोज कुमार
शोधार्थी – वाणिज्य, वाणिज्य एवं व्यवसाय प्रशासन विभाग, ल० ना० मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगां, बिहार, भारत

सारांश
व्यवसाय के अंकेक्षण की विधि बहुत पुरानी है। पर व्यवसाय का यह आर्थिक अंकेक्षण उसके वित्तीय पक्ष की कमजोरियों को प्रस्तुत करता है। आज व्यवसाय को समाज के प्रति उसके योगदान की दृष्टि से भी देखने की इच्छा, समाज रखता है। व्यवसाय का समाज के प्रति योगदान धनात्मक है या ऋणात्मक – यह जानना आवश्यक है। इस हेतु जो अंकेक्षण की विधि विकसित की गई है – वही सामाजिक अंकेक्षण कहलाती है। संक्षेप में, व्यवसाय के योगदान को आर्थिक औ वित्तीय दृष्टियों से तो परखा ही जाना चाहिए, साथ ही उसका सामाजिक मूल्यांकन भी आवश्यक है। जहाँ अंकेक्षण लेखा–पुस्तकों में व्याप्त दोषों को प्रकट करता है वहीं सामाजिक अंकेक्षण व्यवसाय के समाज पर पड़ने वाले प्रभावों को दर्शाता है।

मूल शब्द: व्यवसाय, अंकेक्षण, अवलोकन, समाज

प्रस्तावना
लेखांकन का इतिहास बहुत पुराना है। भारतवर्ष में हजारों वर्ष पहले से ही किसी–न–किसी रूप में इसका अस्तित्व रहा है। हड़प्पा और मोहनजोदड़ों की खुदाइयों ने लेखांकन के प्राचीन काल के अस्तित्त्व को स्वीकार किया है। सभ्यता के विकास के साथ–साथ लेखांकन का भी विकास होता रहा है। लेखांकन का अपना प्रारंभिक स्वरूप में वित्तीय लेखांकन के रूप में जन्म हुआ। यह स्वरूप वर्ष भर के वित्तीय परिणाम (लाभ अथवा हानि) तथा वर्ष के अन्तिम दिन की आर्थिक स्थिति को प्रकट करता रह है। आर्थिक परिणाम ज्ञात करने के लिए लाभ–हानि खाता तैयार किया जाता है जबकि आर्थिक स्थिति प्रकट करने के लिए चिट्ठा तैयार किया जाता है। धीरे–धीरे यह अनुभव होने लगा कि वित्तीय लेखांकन एक शव–परीक्षा के समान है। आवश्यकता इस बात की है कि व्यवसाय बीमार हो उसके पहले ही रोक–थाम के उपाय कर लिये जावें। बीमारी का प्रमुख कारण प्रायः यही देखा गया है कि लागत अधिक, मुनाफा कम की स्थिति व्यवसाय का प्रतिद्वन्द्वियों के सामने टिकने नहीं देती है। इस समस्या ने परिव्यय लेखांकन को जन्म दिया। लेकिन ये सब लेखांकन की विधियाँ भी प्रबन्धकों की आवश्यकताओं को सन्तुष्ट नहीं कर सकी और इसका परिणाम हुआ प्रबन्ध लेखांकन के जन्म के रूप में। वर्तमान समय में वित्तीय लेखांकन, परिव्यय लेखांकन और प्रबन्ध लेखांकन तीनों ही, प्रबन्धकों की विभिन्न प्रकार से सहायता कर रहे हैं। ये तीनों लेखांकन प्रत्यक्षतः प्रबन्धकों अथवा स्वामियों के लिए है। अब यह अनुभव किया जाने लगा कि किसी भी व्यवसाय का स्वामी के साथ–साथ समाज के लिए भी कम महत्त्व नहीं है। सामाजिक व राष्ट्रीय दृष्टिकोण से यह आवश्यक है कि आवश्यकता ने सामाजिक अंकेक्षण सम्बन्धी विचार को जन्म दिया है।

यह कहा जा सकता है कि सामाजिक अंकेक्षण में एक कम्पनी की निष्पत्ति का सामाजिक दृष्टिकोण से मूल्यांकन किया जाता है। एक व्यवसाय के पास जो संसाधन होते हैं वे वास्तव में समाज के होते हैं, अतः इनका उपयोग समाज के सर्वोत्तम भले के लिए किया जाना चाहिए। अतः सामाजिक अंकेक्षण का लक्ष्य यह जाँच करना है कि इन संसाधनों का सामाज के लिए सामान्य व व्यवसाय के लिए विशेष रूप से किस प्रकार उपयोग किया जाता है। इस प्रकार सामाजिक अंकेक्षण एक संस्था की सामाजिक निष्पत्ति की स्वतन्त्र जाँच होती है। सामाजिक लेखांकन में संस्था की क्रियाओं के समाज पर पड़ने वाले प्रभाव को मापा जाता है और रिपोर्ट किया जाता है जबकि सामाजिक अंकेक्षण में यह जाँच की जाती है कि यह मापन सिपोर्टिंग सही और उचित है अथवा नहीं।

सामाजिक अंकेक्षणः उत्पत्ति एवं विकास
कुछ समय तक सामाजिक लेखांकन और सामाजिक अंकेक्षण को एक ही समझा जाता रहा। इससे काफी भ्रम का वातावरण रहा। वास्तव में ये दोनों उसी प्रकार से भिन्न है, जिस प्रकार से लेखांकन और अंकेक्षण। सामाजिक लेखांकन में प्रतिष्ठान की सामाजिक निष्पत्ति सम्बन्धी लेखों की निष्पक्ष जाँच की जाती है।

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि सामाजिक लेखांकन और सामाजिक अंकेक्षण के मूल में सामाजिक निष्पत्ति का मापन है। अमेरिका की नेशनल एसोसिएशन ऑफ एकाउण्टेण्ट्स की समिति ने सामाजिक निष्पत्ति की इस प्रकार वर्णन किया है –

"निगम की सामाजिक निष्पत्ति पद निगम की क्रियाओं के समाज पर प्रभाव को प्रतिबिम्बित करता है। इसमें इसकी आर्थिक क्रियाओं तथा अन्य कार्यों का जीवन की गुणवत्ता में योगदान की निष्पत्ति को सम्मिलित किया जाता है। ये क्रियाएँ कानून की परिधि, प्रतिद्वन्द्वियों के दबाव अथवा अनुबन्धों की आवश्यकताओं से आगे भी जा सकती है।

एनएए (छ।।) समिति ने सामाजिक निष्पत्ति के निम्नलिखित चार बड़े क्षेत्र बताये हैं –

- सामुदायिक विकासः इसमें ऐसी क्रियाएँ सम्मिलित होती हैं जो मूल रूप से जनसाधारण के लाभ के लिए होती है, जैसे – सामान्य लोकोपकारी, भवन निर्माण, स्वास्थ्य सेवाओं का वित्त पोषण, कर्मचारियों में स्वैच्छिक क्रियाएँ, खाद्य कार्यक्रम, सामुदायिक नियोजन तथा सुधार।
- मानव संसाधनः इसमें ऐसी सामाजिक निष्पत्ति आती है जो कर्मचारियों के कल्याण के लिए की गई हों, उदाहरणार्थ, नियुक्ति संबन्धी कार्य में सुधार, प्रशिक्षण कार्यक्रम, काम की दशाएँ, पदोन्नति सम्बन्धी नीतियों तथा कार्स संवर्धन के लिए प्रावधान।
- भौतिक संसाधन और पार्यावरण में योगदानः इसमें पार्यावरण के प्रदूषण को रोकने या कम करने के लिए किये गये उपायों को सम्मिलित किया जाता है, उदाहरणार्थ, हवा, पानी, ध्वनि प्रदूषण, सीमित संसाधनों का संरक्षण तथा घनीभूत क्षय का निबटारा इस क्षेत्र में सम्मिलित किये जाते हैं।
- उत्पाद या सेवा में योगदानः इस क्षेत्र में उपभोक्तावाद, उत्पाद की गुणवत्ता, पैकेजिंग, विज्ञापन, वारण्टी सम्बन्धी प्रावधान तथा उत्पाद सुरक्षा को सम्मिलित किया जाता है।

बोवन ने 1953 में यह विचार प्रतिपादित किया कि जिस प्रकार एक संस्था की वित्तीय निष्पत्ति का मूल्यांकन किया जाता है, उसी प्रकार आने वाले समय में उसकी सामाजिक निष्पत्ति का भी मूल्यांकन किया जाने लगेगा। इस सम्बन्ध में उसने एक महत्त्वपूर्ण पुस्तक 'सोशल रेस्पान्सिबिलिटीज ऑफ बिजनेश' लिखी। वर्ष 1969 में लिनोज के विचारों ने धूम मचाई जब कि उसने प्रस्ताव किया कि कम्पनियों द्वारा सामाजिक–आर्थिक प्रक्रिया सम्बन्धी विवरण पत्र तैयार किया

जाना चाहिए। उसने कहा कि इस विवरण–पत्र में उपक्रम की क्रियाओं के सामाजिक लाभ और हानियों को दिखाया जाना चाहिए।

वर्ष 1971 में अमेरिका की ।इज ेवबपंजमे ने अपने वार्षिक प्रतिवेदन में सामाजिक अंकेक्षण का सामावेश किया। इस कम्पनी के डॉ. क्लार्क सी. एबीटी ने ष्प्रैम ैवबपंस ।नकपज व िडंदंहमउमदजष् नाम की एक पुस्तक लिखी जिसमें कहा गया कि सामाजिक अंकेक्षण सामाजिक चिट्ठे (Social Balance Sheet) के आधार पर किया जाना चाहिए। इसमें क्रेडिट पक्ष पर निवेश ;प्दचनजेद्ध तथा डेबिट पक्ष पर निर्गत ;ल्नजचनजेद्ध दिखाया जाए।

अमेरिकन एकाउन्टिंग एसोसिएशन ने 'सामाजिक निष्पत्ति के लिए लेखांकन' पर एक समिति का गठन किया। इस समिति के अनुसार सामाजिक अंकेक्षण में अग्रलिखित सम्मिलित किया जाना चाहिए :–

1. कम्पनी ने सामाजिक दायित्वों सम्बन्धी कार्यक्रमों के प्रभाव के मूल्यांकन का लेखांकन
2. मानव संसाधन लेखांकन
3. एक संस्था के समाज पर पूर्ण प्रभाव को मापना
4. चुनी हुई सामाजिक लागतों को मापना
5. उपरोक्त (प) से (पअ) के संबंध में प्रतिवेदन प्रस्तुत करना तथा
6. सार्वजनिक (सरकारी) कार्यक्रमों का मूल्यांकन करना।

सामाजिक अंकेक्षण का अर्थ

सामाजिक अंकेक्षण की विचारधारा अभी अपने बाल्यावस्था में है। जितने मतभेद इस विचारधारा के संबंध में है, उनके कारण इसको परिभाषित करना कठिन हो जाता है। प्रत्येक विद्वान ने इसे अपने ही दृष्टिकोण से देखने का प्रयत्न किया है। 1953 में एच. आर. बावेन ने अपनी पुस्तक 'व्यवसाय के सामाजिक उतरदायित्व' (Social Responsibilities of Business) में इसे इस तरह परिभाषित किया है :

"सामाजिक अंकेक्षण की विचारधारा इस बात का संकेत है कि जिस प्रकार अंकेक्षण व्यावसायिक संस्था की वित्तीय स्थिति का मूल्यांकन करता है, उसी प्रकार उचित विधि से, भविष्य में, व्यवसाय अपने सामाजिक उत्तरदायित्व का मूल्यांकन भी करेगा।" गुप्ता, गर्ग एवं दास के अनुसार सामाजिक दृष्टिकोण से किसी व्यवसाय या उद्योग विशेष का मूल्यांकन ही सामाजिक अंकेक्षण कहलाता है। वहीं, एन. जे. यशस्वी के शब्दों में, "किसी संगठन द्वारा उत्पन्न सामाजिक लागतों और सामाजिक लाभों का अंकेक्षण ही सामाजिक अंकेक्षण है..... सामजिक अंकेक्षण किसी संगठन के आर्थिक परिणामों से भिन्न इसके सामाजिक परिणामों का अध्ययन और मूल्यांकन करने की विधि है। यह व्यवसाय के जीवन की सामाजिक गुणवत्ता पर पड़ने वाले प्रभावों के स्थान पर जीवन की सामाजिक गुणवत्ता पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन है। इस प्रकार व्यवसाय के सामाजिक प्रभावों के अध्ययन की विधि ही सामाजिक अंकेक्षण है।

सेक्षेप में, सामाजिक अंकेक्षण किसी व्यवसाय की सफलता को समाज के दृष्टिकोण से आँकने की विधि है। यह वह विधि है जिसके माध्यम से व्यवसाय द्वारा समाज के लिए उत्पन्न सुविधाओं और कठिनाइयों का आकलन किया जाता है। सामाजिक अंकेक्षण व्यवसाय के योगदान और उसकी लागत का ब्यौरा सामाजिक दृष्टि से प्रस्तुत करता है। यह लागत अंकेक्षण और वित्तीय अंकेक्षण से भिन्न है और व्यवसाय द्वारा उत्पन्न सामाजिक योगदान और लागतों से संबंधित है। व्यवसायी व्यवसाय करते समय, प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से, जाने–अनजाने में, ऐसी सामाजिक व आर्थिक कठिनाइयाँ उत्पन्न करता है, जिसका लेखा–जोखा ही सामाजिक अंकेक्षण है। अतः सामाजिक अंकेक्षण व्यवसाय के समाज पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करता है।

सामाजिक अंकेक्षण की आवश्यकता

समाजिक अंकेक्षण एक नयी विचारधारा है जिसकी आवश्यकता व्यवसाय पर समाज के नियंत्रण की इच्छा से उत्पन्न हुई है। वित्तीय दृष्टिकोण से हटकर सामाजिक अंकेक्षण दृष्टिकोण से जाँचता है। इसी से हमें स्पष्ट होता है कि क्या लाभ के अतिरिक्त भी ऐसे आधार हैं जो व्यवसाय की सफलता या असफलता को प्रदर्शित करते हैं? सामाजिक अंकेक्षण वित्तीय अंकेक्षण का पूरक माना जा सकता है जिसमें वित्तीय जाँच से एक कदम आगे बढ़कर सामाजिकता के आधार पर व्यवसाय का अंकेक्षण किया जाता है।

वित्तीय अंकेक्षण की अपनी कमियाँ हैं। वित्तीय अंकेक्षण की दृष्टि से व्यवसाय की जाँच करता है व उसकी कमियों को प्रकट करता है। पर इस कार्य में भी वित्तीय अंकेक्षण पूर तरह सफल हो पाता है, यह नहीं कहा जा सकता। 1895 में "लंदन एण्ड जनरल बैंक" के मुकदमे में कहा गया था, "अकेक्षक का यह कर्त्तव्य नहीं है कि वह संचालकों तथा अंशधारियों को सलाह दे कि उन्हें क्या करना चाहिए। ऋणों का बुद्धिमानी या मुर्खता से प्रतिभूति या बिना प्रतिभूति के स्वीकार करने से भी उसका कोई सम्बन्ध नहीं है। उसका कार्य यह देखना भी नहीं है कि व्यवसाय बुद्धिमतापूर्वक चलाया जा रहा है या मूर्खतापूर्वक, लाभ पर चलाया जा रहा है या हानि पर, लाभांशों की घोषणा उचित है या अनुचित। उसका कर्त्तव्य तो अंशधारियों के प्रति है। उसका कार्य तो यहीं तक सीमित है कि वह यह बताये कि अंकेक्षण के समय व्यवसाय की सही वित्तीय स्थिति क्या है?"

इस प्रकार अंकेक्षण केवल वित्तीय आँकड़ों की जाँच तक सीमित रहता है और व्यवसाय के सामाजिक औचित्य का अध्ययन नहीं करता इसलिए सामाजिक अंकेक्षण की आवश्यकता पड़ती है।

सरकार भी कानून बनाकर व्यवसाय को नियंत्रित करने की कोशिश करती है। सरकार यह देखती है कि कहीं व्यवसाय समाज के किसी वर्ग की कठिनाई में डालकर तो नहीं किया जा रहा है। सामाजिक अंकेक्षण उन लागतों की ओर सरकार का ध्यान आकर्षित कर सकता है। कहीं–कहीं तो सरकार ने विशेष अंकेक्षण की व्यवस्था इसी उद्देश्य से की है, जैसे भारतवर्ष में भारतीय कम्पनी अधिनियम की धारा 227 (4) के अधीन केन्द्रीय सरकार ने एक आदेश जारी किया जिसे "निर्माणी तथा अन्य कम्पनियाँ (अंकेक्षण रिपोर्ट) आदेश, 1975" कहा जाता है। इसके अधीन कुछ विशेष प्रकार की कम्पनियों में विशेष अंकेक्षण की व्यवस्था की है। इस प्रकार सामाजिक अंकेक्षण का प्रयोग सरकार व्यवसाय में उचित नियंत्रण व नियमन के लिए कर सकती है।

सामाजिक अंकेक्षण के माध्यम से समाज व व्यवसाय में उचित सामंजस्य बैठा जा सकता है। इससे समाज को ज्ञात हो सकता है कि व्यवसाय लाभ कमाने के अतिरिक्त अन्य कौन सा योगदान समाज के प्रति कर रहा है। साथ ही सामाजिक अंकेक्षण से व्यवसाय को भी यह ज्ञात हो जायेगा कि वह समाज के लिए क्या कठिनाइयाँ उत्पन्न कर रहा है जिन्हें दूर करने पर समाज से उसका संघर्ष टाला जा सकता है। व्यवसाय को सामाजिक–स्वीकृति प्राप्त कराने हेतु– सामाजिक अंकेक्षण व्यवसाय के सामाजिक विरोध को कम कर सकता है, यह व्यवसाय को सामाजिक स्वीकृति दिल सकता है। व्यवसाय द्वारा यदि मानवीय और भौतिक साधनों का दुरूपयोग किया जा रहा हो या समाज के विभिन्न वर्गों में से किसी वर्ग के प्रति व्यवसाय का योगदान यदि ऋणात्मक हो तो सामाजिक अंकेक्षण इन तथ्यों को प्रकाश में लाकर समाज व व्यवसाय दोनों को सचेत कर सकता है। इस प्रकार सामाजिक अंकेक्षण व्यवसाय के सामाजिक प्रभावों को जानने और उनका प्रबन्ध करने की एक अच्छी विधि सिद्ध हो सकती है। इससे व्यवसाय की सामाजिक लागतों को भी नियंत्रण में रखा जा सकता है।

आज समाज व सरकार दोनों यह महसूस करते हैं कि उन्हें व्यावसायिक गतिविधियों के बारे में अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त होनी चाहिए। वित्तीय अंकेक्षण उन्हें व्यवसाय की वित्तीय स्थिति से परिचित कराता है लेकिन सामाजिक अंकेक्षण उन्हें बताता है कि इस वित्तीय स्थिति को प्राप्त करने के लिए व्यवसाय ने क्या–क्या सामाजिक लाभ–हानि उत्पन्न की है। इस प्रकार सामाजिक अंकेक्षण सरकार व समाज के "जानकारी प्राप्त करने के अधिकार" की रक्षा करता है।

सामाजिक अंकेक्षण का क्षेत्र

सामाजिक अंकेक्षण में किसी संगठन के वित्तीय मूल्यांकन से अलग हटाकर उसके सामाजिक निष्पादन का व्यवस्थित अध्ययन और मूल्यांकन किया जाता है। इसके अन्तर्गत व्यापार की सफलता–असफलता को समाज की दृष्टि से मापा जाता है। सामाजिक दृष्टिकोण से किसी संगठन का मूल्यांकन ही सामाजिक अंकेक्षण की विषय–वस्तु मानी जा सकती है।

एक नई विचारधारा होने के कारण सामाजिक अंकेक्षण में स्पष्ट विषय–सामग्री का आभाव देखा जा सकता है। सामाजिक अंकेक्षण में व्यवसाय के वित्तीय योगदान से भिन्न व्यवसाय के सामाजिक लाभों व उसकी सामाजिक लागतों का अध्ययन ही इसकी विषय–सामग्री में माना जा सकता है। इसे निम्नलिखित संयोग द्वारा समझा जा सकता है –

व्यवसाय

उपर्युक्त संयोग से स्पष्ट है कि सामाजिक अंकेक्षण में एक ओर तो व्यवसाय की सामाजिक लागत आँकी जाती है और दूसरी ओर व्यवसाय के सामाजिक योगदान या निष्पादन या लाभों का लेखा–जोखा लिया जाता है। स्पष्ट है कि इन बातों पर व्यवसाय के वित्तीय अंकेक्षण में विचार नहीं किया जाता। सामाजिक अंकेक्षण का क्षेत्र समाज के प्रति उसका धनात्मक एवं ऋणात्मक योगदान के अध्ययन का विषय है।

निष्कर्ष

आज व्यवसाय एक शक्तिशाली संस्था है। व्यवसाय ने वैज्ञानिक प्रगति को औद्योगिक प्रगति में बदलने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। समाज में रोजगार के साधन उपलब्ध कराना, उत्पादन वृद्धि से समाज की आवश्यकताओं को पूरा करना, समाज के उत्पादन के साधनों को उत्पादकता प्रदान करना और समाज की आर्थिक समस्याओं को सुलझाना, व्यवसाय के महत्वपूर्ण कार्य रहे हैं। व्यवसाय एक सामाजिक क्रिया है। व्यवसाय करना समाज की मद्द के बिना कठिन है। समाज द्वारा प्रदान किये जाने वाले श्रम, पूँजी आदि उत्पादन के साधनों से व्यवसाय चलाया जाता है। पर व्यवसायी अपने आर्थिक सत्ता के आधार पर समाज में एक विशाल और शक्तिशाली स्थान ग्रहण कर लेता है। आज विभिन्न समाजों में हमें ऐसी स्थिति दिखलाई पड़ती है कि व्यवसायी, समाज और सरकार से भी अधिक शक्तिशाली हो गया है। सरकारों का नियंत्रण शिथिल और समाज का अंकुश ढ़ीला हो गया है। व्यवसाय जहाँ एक ओर समृद्धि और सम्पन्नता का प्रतीक बना, वहीं दूसरी ओर यह आर्थिक और औद्योगिक गड़बड़ियों, शोषण और भ्रष्टाचार, राष्ट्रीय साधनों की बर्बादी और दुरूपयोग के आरोपों का शिकार हुआ है। अधिक से अधिक लाभ कमाने की प्रवृत्ति ने व्यवसायी को लोभी और उसके व्यवसाय को 'शोषण का माध्यम' बना दिया। व्यवसायी ने ज्यादा से ज्यादा लाभ कमाने की दौड़ में उस समाज को भूला दिया जिसकी मदद से और जिसके लिए वह व्यवसाय कर रहा था। जहाँ व्यवसाय की ओर अपनी समस्याओं के समाधान देख रहा था, वहाँ व्यवसाय ने समाज के सामने – प्रदूषण, मानव मूल्यों में गिरावट, आर्थिक शक्ति के केन्द्रीयकरण, श्रमिकों के शोषण, कर चोरी, काला धन, राजनैतिक और सामाजिक जीवन में भ्रष्टाचार जैसी समस्याएँ पैदा कर दी। यहीं नहीं बाजार में वस्तुओं की कृत्रिम कमी, मूल्यों में अवांछित वृद्धि, कम माप–तौल, तस्करी आदि का आरोप भी आज व्यवसाय पर लगाया जाता है। इन बातों के परिणामस्वरूप व्यवसाय पर प्रभावी नियंत्रण और उके नियमन की आवश्यकता उत्पन्न हुई। कुछ बातों के सम्बन्ध में सरकारों ने कानून बनाये, कुछ के सम्बन्ध में समाज ने आवाज उठाई और कुछ के सम्बन्ध में व्यावसायिक प्रबन्ध की नई विधियों का जन्म हुआ, जिससे की व्यवसाय और इसके द्वारा उत्पन्न समस्याओं को सुलझाया जा सके। सामाजिक अंकेक्षण भी इसी दृष्टिकोण से अपनाई जाने वाली एक विधि है।

व्यवसाय के अंकेक्षण की विधि बहुत पुरानी है। पर व्यवसाय का यह आर्थिक अंकेक्षण उसके वित्तीय पक्ष की कमजोरियों को प्रस्तुत करता है। आज व्यवसाय को समाज के प्रति उसके योगदान की दृष्टि से भी देखने की इच्छा, समाज रखता है। व्यवसाय का समाज के प्रति योगदान धनात्मक है या ऋणात्मक – यह जानना आवश्यक है। इस हेतु जो अंकेक्षण की विधि विकसित की गई है – वही सामाजिक अंकेक्षण कहलाती है। संक्षेप में, व्यवसाय के योगदान को आर्थिक औ वित्तीय दृष्टियों से तो परखा ही जाना चाहिए, साथ ही उसका सामाजिक मूल्यांकन भी आवश्यक है। जहाँ अंकेक्षण लेखा–पुस्तकों में व्याप्त दोषों को प्रकट करता है वहीं सामाजिक अंकेक्षण व्यवसाय के समाज पर पड़ने वाले प्रभावों को दर्शाता है।

सन्दर्भ सूची

1. जैन, डी सी खण्डेलवाल, एम. सी. एवं पारीक एच. एव (2009), प्रबन्ध एवं परिव्यय अंकेक्षण, रमेश बुक डिपो, जयपुर
2. नेशनल एसोसिएशन ऑफ एकाउण्टेण्ट्स, अमरीका की एकाउण्टिंग फॉर कॉरपोरेट सोशल परफारमेंस के अध्ययन का गठित कमिटी की रिपोर्ट, 1974
3. क्लार्क सी. (1977), द सोशल ऑडिट फॉर मैनेजमेंट, एमेसन, न्यूयार्क
4. यशस्वी, एन. जे. (1977), सोशल ऑडिट पर द इकोनोमिक टाइम्स में संपादकीय पृष्ठ पर आलेख, 5 मार्च
5. उपाध्याय, जी. शर्मा, आर. एल. एवं दयाल, पी. (2004), व्यावसायिक वातावरण, रमेश बुक डिपो, जयपुर
6. लन्दन एण्ड जनरल बैंक मुकदमें का निर्णय, 1895
7. भारतीय कम्पनी अधिनियम 1956 की धारा 227 (4।)